

international exchange, courses in the STEM areas may be explored for exchange leading to joint degrees/certifications. Under this initiative, more internationally relevant curricula in the sciences, and social sciences should be popularized. The international students need to be provided with meaningful opportunities for social engagement, quality residential facilities and on-campus support. Thus, India should be projected as a global study destination providing premium education at affordable costs thereby helping to restore its role as a *viśvaguru*.

**Quality Academic Research-NEP 2020** aims at enhancing the quality of academic research and bringing it at par with the international levels. According to Earley & Bubb (2004), professional development of teachers should be an ongoing process taking place in either external or work based settings, or aim at promoting learning and development of professional knowledge, skills and values. The policies envisioned in the NEP 2020 have the potential to bring about a change in the theory-data relationship existing until now where the theoretical formulations were very often borrowed from the non-Indian sources and the data supplied for study were mostly from the resources in the vicinity of the research undertaking institutions. Emphasis is being laid on the use of the Indian languages at various levels of education, including research.

**Conclusion-NEP 2020** plays a very significant role in Higher Education. It focuses on holistic development, multidisciplinary learning, flexibility, technology integration, teacher empowerment and assessment reforms. It focuses on a student centered and inclusive education system. However, its implementation in the Higher Education Institutions presents both challenges and opportunities. Thus the very success of this policy will depend on the collective efforts of all the stakeholders.

\*\*\*\*\*

### References:

1. Earley, P. & Bubb, S. (2004). Leading and managing continuing professional development: Developing people, developing schools. London: SAGE Publications.
2. Ghose, D. (2021). Indian Knowledge Systems: Relevance and Applications. New Delhi: Concept Publishing.
3. IKS Division, Ministry of Education. (2021). Introduction to Indian Knowledge Systems. New Delhi: Government of India.
4. Mandal, S. (2018). Teaching in Indian Higher Education: Six Principles for Improvement. International Higher Education. Boston College. No. 95, Fall Issue.
5. Salmi, J. (2018). All around the world—Higher education equity policies across the globe. Lumina Foundation.
6. Saxena, Pradeep K and Abhay Kumar (2017). Skill Development in India: Status and Policy Concerns, Lokashraya Foundation Working Paper Series 4, New Delhi.
7. Subrahmanyam, S. (2020). Indian Knowledge Traditions and Contemporary Challenges. Oxford University Press.
8. Varghese, N. V. (2021). Directions of Change in Higher Education: From Massification to Universalization. In Chattopadhyay, Saumen, Simon Marginson and N. V. Varghese (Eds.) Changing Higher Education in India. London, Bloomsbury Academic, 23-46.

## राजस्थानी लोक गीतों में नारी जीवन

प्रीति पारीक

शोधार्थी

डॉ. पिकी पारीक

शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य  
हिन्दी विभाग - वनस्थली विद्यापीठ

**सारांश** -सम्पूर्ण संसार में व्याप्त लोक-मानस की सुख-दुख की अनुभूतियों की भाव-भीनी गेय अभिव्यक्ति ही लोकगीत है। मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक के सम्पूर्ण संस्कार, तीज त्योहार, व्रत-उत्सव सभी लोक गीतों के माध्यम से सम्पूर्ण होते हैं। लोक साहित्य में लोक गीतों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि लोक गीतों के अभाव में लोक साहित्य की कल्पना अधूरी है। साहित्य की अन्य विधाएँ जहाँ नीति या मनोरंजन की बात करती है, वहीं यह लोक गीत गृहिणी के मधुर कंठ से निकलकर मांगलिकता को प्रकट करते हैं। साथ ही इन गीतों के द्वारा प्रत्येक प्रदेश की प्रादेशिक संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाज, व्रत-त्योहार, सामाजिक परम्पराएँ मान्यताएँ और आंचलिकता का ज्ञान होता है। इन लोक गीतों ने सांस्कृतिक गौरव और अस्मिता को संरक्षित करने का कार्य किया है। लोक गीतों का सृजन नारी के बिना अधूरा है। राजस्थानी लोकगीतों में नारी जीवन के विविध पक्षों का बड़ा ही सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है। भारतीय नारी परिवार के नित्य कार्यों में अत्यन्त व्यस्त रहती है अतः वह गृहस्थी के कार्यों को गीत बनाकर मंगलमय बना देती है। लोक गीतों में नारी जीवन की प्रत्येक अवस्था तथा परिस्थिति का अनुपम उल्लेख मिलता है।

**बीज शब्द** - आंचलिकता, अस्मिता, मांगलिकता, सृजन, अनुपम, मान्यताएँ, भावप्रवण, मुदुल, संगीतात्मकता, मार्मिक, पारिवारिक, समृद्ध, प्रताड़ना, परम्पराएँ, कामणगारी

**मूल आलेख** -सांस्कृतिक विरासत के सर्वांगीण विकास को अपने अंचल में समेटे हुए किसी भी प्रदेश का लोक साहित्य वहाँ की अमूल्य धाती होता है। राजस्थानी लोक साहित्य में लोकगीतों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। राजस्थानी संस्कृति और जन-जीवन पर इन लोकगीतों का अत्यधिक प्रभाव है। इन लोक गीतों में यहाँ के जनजीवन की मनोरम झाकियाँ देखने को मिलती हैं।

“राजस्थान इस दृष्टि से बहुत धनी है। यहाँ के लोक-गीतों में विचारों की जो सम्पन्नता, भावना का जो सौन्दर्य है वह भारत के अन्य प्रान्तों के लोक-गीतों में प्रायः नहीं है। जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में गीतों का प्रमुख स्थान होता है। बालक जब माँ के गर्भ में होता है तभी से गीत गाये जाते हैं। जन्म की खुशी भी गीतों के माध्यम से व्यक्त होती है। अनेक संस्कार इन गीतों के माध्यम से ही सम्पन्न होते हैं। “सांस्कृति गौरव और अस्मिता को संरक्षित और पल्लवित करने का कार्य जितना लोक गीतों के माध्यम से हुआ है उतना अन्य किसी विधा के द्वारा नहीं।” लोक गीत लोक मानस के लिए अपार ज्ञान के स्रोत होते हैं क्योंकि यह लोक के मनोभावों को प्रकट करने के लिए सरलतम साधन है। “जिस प्रकार वेद आर्य संस्कृति के ज्ञानागार हैं, वैसे ही लोकगीत भी हमारी संस्कृति के भव्य भंडार हैं।” नर तथा नारी को समाज का मूल आधार स्तम्भ माना गया है जिन पर देश, समाज तथा पारिवारिक उन्नति निर्भर है। लोकगीतों में स्त्री-पुरुष संबंधों के अतरंगी सुंदर चित्र मिलते हैं। लोकगीतों के सृजन में जितना योगदान महिलाओं ने दिया है उतना पुरुषों ने नहीं। नारी ने अपनी गहरी मनोवेदनाओं को गीतों के माध्यम से समाज के सामने रखा है।

राजस्थानी लोक गीत यहाँ की नारियों के हृदय की पुकार है। वह पुकार जो उनकी वास्तविक भावनाओं का प्रतीक है। परिवार की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाली स्त्री ने क्या भोगा, क्या सहा, क्या किया और क्या चाहा इनके संकेत हमें इन लोक गीतों के माध्यम से प्राप्त होते हैं। “नारी जाति सीधी सरल एवं भावप्रवण होती हैं। उसके मृदुल कंठो ने अपने अभावो और भावनाओं की अभिव्यक्ति सुख तथा दुःख दोनों मौको पर गाकर ही प्रकट की है।” राजस्थान लोक गीतों की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध रहा है यहाँ लोक गीतों में नारी के दो रूप दिखाये गये हैं- एक और जहाँ वह गृह-लक्ष्मी, पतिव्रता, प्रियतमा, सती-साध्वी तथा श्रेष्ठतम माता है। वही दूसरी तरफ उसे कर्कशा, फूहड़, कामणगारी तथा छिनाल बताया गया है। लोकगीत नारी जीवन के प्रिय साथी है जिन्हें वे बचपन से ही तल्लीन होकर गाती आई है। इन लोक गीतों के माध्यम से हमें नारी जीवन के विविध पहलु देखने को मिलते हैं। नारी की मनोव्यथा की गेय अनुभूति ही ये लोकगीत है।

इन गीतों के माध्यम से छोटी-छोटी बालिकाएँ अपने जीवन की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेती है। बालिकाओं के गीतों में गृहस्थी के कर्तव्य संभालने की सहज स्वाभाविक कामना व्यक्त होती है। एक लोकगीत में एक बालिका अपने भाई को जिमाने के लिए काचरियां लाने की इच्छुक है वह अपनी माँ से इजाजत लेकर ऊँचे मगरे पर जाकर काचरियां लाना चाहती है तथा अपने भाई को छीलकर छोंककर जिमायेगी।

“ऊँचे मगरे जाऊँ अ माय, उलिया काचर लाऊँ अ माय  
छौलने छमकाऊँ अ माय, वीरा नै जिमाऊँ अ माय  
वीरौ म्हारौ भाई अ माय, हूँ वीरा री बाई अ माय”

बालिकाओं के भावुक हृदय का परिचय उनके बालपन में ही हो जाता है वे अपने छोटे भाईयों से बहुत प्रेम करती है अपने छोटे भाईयों को सुलाने व खिलाने के लिए इस प्रकार लोरियां गाती है -

“सोई रे भाई सोई, थारी मां करै रसोई  
रसोई में खाजा, थारौ बाप दिल्ली रौ राजा  
लोरी अ बाई लोरी, तनै दध भरी कटोरी  
ऊपर सक्कर भौरी।”

नारी जीवन की विवशता यह रही है कि बालपन में पीहर के आंगन की धूल में खेलती बेटी को विवाह के पश्चात परायी होकर विदा कर दिया जाता है। पिता का घर उसके लिए पराया हो जाता है फिर तो वह कभी किसी विशेष अवसर पर ही अपने घर आ सकती है। लड़को के लिए जहाँ विवाह के पश्चात कुछ नहीं बदलता वह बड़े होकर अपने बचपन के साथियों से मिल सकते हैं किन्तु नारी जीवन की स्थिति बड़ी मार्मिक है उनका तो अपनी बालपन की सहेलियों से मिलना भी बड़ा मुश्किल हो जाता है। उसी मनोव्यथा का चित्रांकन इस गीत में हुआ है -

“वीरा रै विवाह में बहिन सँ मिलस्यां  
बाबुल सँ मिलस्यां मायड़ सँ मिलस्यां  
साथण सँ कद मिलस्यां अ  
साथण मैलौ दौरौ अ कडी होस्यां नगरां फिरस्यां  
साथण मैलौ दौरौ अ।”

राजस्थान में कन्या को कोयल की उपमा दी जाती है। कन्या की विदाई का दृश्य बड़ा ही कारुणिक होता है। बचपन से पाली पोसी अपनी कन्या को अपने से अलग करना किसी भी पिता के लिए बड़ा ही कठिन होता है। उसी प्रकार अपनों को छोड़कर किसी पराये पुरुष के साथ पराई जगह पर जाकर रहना किसी भी स्त्री के लिए अत्यधिक पीड़ादायी होता है। प्रस्तुत गीत के माध्यम से माता-पिता द्वारा अपनी पुत्री को विदा करने दुःख दिखाया गया है -

“बन खंड री ए कोयल, बन खंड छोड कठै चाली?  
थारै आले अ दीवालै गुड़िया धरी, बन खंड री अ कोयल

थारी सात सहेलियां उणमणी, बन खंड री अ कोयल।”

राजस्थानी समाज एक ऐसा समाज रहा है जिसमें पुरुषों को अवसर अधिक प्राप्त है। महिलाओं को अवसर कम प्राप्त हुए है जिसके माध्यम से की वह अपने आप को व्यक्त कर सके किन्तु विवाह या किसी अवसर पर नारी ने इन गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को बखूबी व्यक्त किया है। जैसे की विवाह के अवसर पर स्त्रियों द्वारा गाई जाने वाली गालियां। इन गालियों के माध्यम से ब्याई के साथ परिहास करती है इसी से सम्बन्धित एक गाली की कुछ पंक्तियाँ हैं -

“सगाजी ने काली कुत्ती पराणावौ जी नारायण जी परमेश्वर जी  
हथलेवों कीकर जोडा नारायण जी परमेसर जी  
सगोजी रो हाथ कुत्ती रौ पंजो यं हथलेवो जोडो जी  
अ फेरा किण विध खासी जी नारायण परमेसर जी  
आगै सगाजी नै लारै कुत्ती जी लप लप फेरा खासी।।”

राजस्थानी लोक गीतों में विवाह के पश्चात जब एक कन्या अपनी नयी दुनियां के सपने संजोती है। अपने माता-पिता का घर छोड़कर आती है तथा संसुराल को ही अपना सब कुछ मानने लगती है। जहाँ वह ससुर और देवर में अपने पिता तथा भाई का रूप देखती है तथा सास और ननद में अपनी माँ और बहिन को खोजती है किन्तु जब उसका सत्य से सामना होता है तो वह पाती है कि जिस सास में वह अपनी माँ को खोज रही है उसी सास के द्वारा उसे ताने तथा गाली दी जाती है। सास के ताने तथा कटाक्ष सहना बहु की विवशता होती है। प्रस्तुत गीत के माध्यम से बहु सास के द्वारा किये गये अत्याचार और कष्टों का वर्णन अपनी माँ से करते हुए कहती है -

“बाअी नै दीनो सासु धानड़ सोवणों,  
फटक्यो फटक्यो, माँ, डाल दो डाल

अध मण फटक्यो बाजरो। बाअी नै दीनो सासु पीसणो  
पीस्यो पीस्यो, अ मा, डाल दो डाल, अध मण पीस्यो बाजरो।”

नारी जीवन की सार्थकता मातृ-शक्ति प्राप्त करने में है। सन्तानहीन नारी को समाज में अनेक तानो तथा व्यंग्य वाक्यों को सहना पड़ता है। निस्सन्तान नारी के लिए बाँझ शब्द का प्रयोग किया जाता है जो उसके लिए एक गाली की तरह होता है। नारी जीवन की सफलता सन्तान होने पर ही मानी जाती है क्योंकि एक सन्तानहीन नारी अपूर्ण मानी जाती है। जिस स्त्री को सन्तान नहीं होती उसे अनेक मानसिक कष्टों को सहना पड़ता है। प्रातः काल उस स्त्री का मुख देखना भी अच्छा नहीं माना जाता है उसे समाज के साथ-साथ अपनों के द्वारा भी प्रताड़ित किया जाता है। उसकी सास, देवरानी-जेठानी उस पर व्यंग्य करती है उसे ताने मारती है। साथ ही उसके प्राणों से प्रिय पति के द्वारा भी उसे प्रताड़ित किया जाता है। सन्तान प्राप्ति के लिए नारी अनेक देवी-देवताओं की मनौतियाँ करती है अपनी कोख के फलीभूत होने के लिए टोने-टोटकों का भी प्रयोग करती है। राजस्थानी लोक गीत के माध्यम से सन्तानहीन नारी का करुण भाव मौन रूदन करता हुआ प्रस्तुत हुआ है -

“सासू तो कैवे म्हारी बहवड़ बाँझडी, परणियाँ लावे ल्यौडी सौक  
कासी रा बासी अमर बधाँदौ नीं जुग में पालणौ  
देरांणी जेठांणी बोलै अवंला बोल, ज्यारँ हीँडै है पजत पालणौ  
कासी रा बासी पुतर बिन बाजं म्हे कुल में बाझंडी।”

हमारे समाज की यह विडंबना है कि यहाँ पुत्र के समक्ष पुत्री को उपेक्षित किया गया है। राजस्थान में पुत्र जन्म को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। प्रत्येक परिवार पुत्र जन्म के लिए लालायित रहता है। पुत्रहीन स्त्री का मुख देखना भी अशुभ माना जाता है। नारी का सौन्दर्य तथा यौवन तभी सार्थक माना जाता है जब वह एक अच्छे पुत्र को जन्म दे। इसी भावना की अभिव्यक्ति को प्रस्तुत पंक्तियों में देखा जा सकता है -

“मिरंग न बाज्यो बायरो, अदरा न बठयो मेहा  
जोबन जायो न बेटडो, तीनं हारी देहा।।”

राजस्थानी लोकगीतों में यह भी वर्णित है कि जब तक बहु के पुत्र नहीं होता तब तक वह सास के सामने घुंघट नहीं हटा सकती। पुत्र जन्म से पूर्व वह अपनी पसंद के कपड़े नहीं पहन सकती। वह चूनड़ी और पोंमचा तो

ओढ सकती है किन्तु पीला ओढने का अधिकार केवल एक पुत्र की माँ को ही होता है। यदि पुत्र सुख से वंचित कोई स्त्री पीला ओढने की बात करती है तो वह हँसी की पात्र होती है इसी भावना को प्रस्तुत लोक गीत के माध्यम से व्यक्त किया गया है -

“गैली ये मरख बावली तं धण असल गिवांर  
बिन जायां क्या ओढस्यो, हैसै ये म्हाजन लोग।”

समाज में पुत्र के जन्म पर हर्षोल्लास तथा खुशी मनाई जाती है वही पुत्री के जन्म पर परिवार में एक मातम सा छा जाता है। जिस स्त्री के पुत्र नहीं होता उसे समाज में किसी प्रकार का सम्मान नहीं दिया जाता। परिवार में पुत्र जन्म को ही लोग अपनी शान मानते हैं। कन्या को जन्म देने वाली माँ को तिरस्कार तथा अपमान का सामना करना पड़ता है। सगे-संबंधियों के साथ उस स्त्री का पति भी उसे सम्मान नहीं देता और कहता है कि यदि तुमने पुत्री को जन्म दिया तो मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊँगा तथा तुम्हारा पलग घर के पीछे लगवाऊँगा और खाने के लिए नमक का लड्डू तथा ओढने के लिए गंदे तथा काले वस्त्र दंगा इस प्रकार पुत्रविहीन स्त्री का समाज में कोई साथ नहीं देता उसे तो अपने पति द्वारा ही मानसिक प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। इसी भावना की अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त होती है -

“गोरी जे थारे जनमैला धीव,  
तो खाट पिछोकडे घलावसां जी।  
लाडू खारे लणं रा जी,  
तौ पडदो ताणा काली कमली रौ जी।  
कदेई नी मखडे बोलसां जी,  
(तौ) म्हे तो सिधांवाला चाकरी जी।”

राजस्थानी लोक गीतों में पारिवारिक सम्बन्धों से सम्बन्धित अनेक गीत मिलते हैं जिनमें नव वधु का स्वागत बड़े लाड-चाव से सास के द्वारा किया जाता है। जब वह अपने ससुराल में श्रृंगार करके आती है तब सास के द्वारा अपनी बह से पूछा जाता है कि बह अपने गहनों का अर्थ बताओं तब बह के द्वारा कहा जाता है की गहने तो मेरे देवर-जेठ है गहने तो मेरी ननद के बीर है। इस प्रकार बह अपने परिवारजनों को अपने गहनों की उपमा देती है। जिससे प्रसन्न होकर सास अपनी बह से कहती है की बह मैं तुम्हारी जीभ कर बलिहारी जाती हूँ तुमने इस प्रकार मेरे सारे परिवार को लाड किया है। प्रस्तुत लोकगीत के माध्यम से नववधु द्वारा अपने ससुराल पक्ष के प्रति प्रेम तथा आदर की अभिव्यक्ति हुई है -

“म्हारा सासुजी बूझै ये बह:  
थारे गहणां को अरथ बताये।  
सासु गहणां जी गहणां के करो,  
गहणां म्हारा देवर जेठ  
गहणां भोली बाईजी रा वीर,  
म्हारा ससुरा गढां का राजवी  
सासुजी म्हारा अरथ भण्डार।”

राजस्थानी लोक गीतों में अत्यन्त विविधता देखने को मिलती है। इन लोक गीतों में जहाँ एक और नारी को गृहलक्ष्मी तथा पतिप्रिया तथा सती साध्वी बताया गया है तो वही दूसरी और उसके लिए बांझ, कामणगारी, कर्कशा जैसे शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। “राजस्थान का लोक जीवन और लोक साहित्य कामण या जाद टोने से काफी प्रभावित रहा है। संभवतः कामिनियों यहाँ कामण से सम्बन्धित अनेक गीत गाये जाते रहे जिनमें स्त्रियों को जाद-टोना जानने वाली तथा कामणगारी कहा गया है। उदाहरण स्वरूप कामण गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है -

“दिल्ली के दरवाजै कामण मोल बिकै छै राज,  
बाई का बाबोजी कामण मोल लिया छै राज  
धाल तराज कामण तोल लिया छै राज  
सेर दुसेरी राड केराधू, अध सैर न अधर नचांछू  
तो मेरा कामण साचां।”

परिवार सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। पति-पत्नी के मधुर एवं कोमल सम्बन्ध परिवार में ही पल्लविते होते हैं। पति-पत्नी के अर्थात्

तथा एकनिष्ठ प्रेम का सुन्दर वर्णन लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त होता है। एक लोक गीत में प्रियतमा अपने प्रिय से उपवन में आकर मिलने की प्रार्थना करती है। पपीहे की पुकार उसके मिलने की उत्कण्ठा को बढा रही है लेकिन उसका प्रेमी विवाहित है। उसमें अपनी पत्नी के प्रति निष्ठा है वह अपनी पत्नी के प्रति वफादार है इसी प्रेम का वर्णन प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से हुआ है -

“भंवर म्हारै बागां आजौ जी,  
म्है बागां फिरू अकेली, पपैयो बोल्यो जी,  
सुन्दर गोरी किस विध आवां जी म्हाकी परणी करै लड़ाई,  
पपैयो बोल्यो जी!  
भंवर थाकी परणी मरज्यो जी,  
म्है बागां फिरू अकेली, पपैयो बोल्यो जी।  
सुन्दर गोरी के थेंडै मरज्यौ जी  
म्हाकी परणी वंस वधावै, पपैयो बोल्यो जी  
म्हाकी परणी पूत खिलावै, पपैयो बोल्यो जी।”

इस प्रकार हम पाते हैं कि राजस्थानी लोक गीतों में नारी जीवन के विविध रूप देखने को मिलते हैं। नारी ने अपने अन्तः मन की पीड़ा को इन गीतों के माध्यम से ही प्रस्तुत किया है। नारी ने अपनी मनोवेदनाओं को गीतों के माध्यम से गाकर समाज के समक्ष रखा है। वह अपने सुख-दुःख, उत्सव त्योहार, रीति-रिवाज, पर्व प्रथा को मानने के लिए गार्ती है। राजस्थानी लोक गीतों में नारी को जहाँ एक और अपने पिता की कोयलड़ी तथा बाबोसा री लाडली दिखाया गया है। वहीं दूसरी और उसके जन्म पर मातम भी मनाया गया है। सन्तानहीनता को नारी के लिए अभिशाप माना गया है सन्तानहीन नारी को समाज तथा परिवारजनों द्वारा प्रताड़ित किया गया है। पुत्र जन्म पर जहाँ हर्ष व उल्लास मनाया जाता है वहीं आज भी पुत्री के जन्म पर दुःख मनाया जाता है। यह हमारे समाज की विडंबना ही है कि नारी को आज भी पुरुष अपने अनुकूल चलाना चाहता है उसे अपने नियंत्रण में रखना चाहता है हालाँकि समर्थ के साथ-साथ नारी की स्थिति में सुधार देखने को मिल रहा है किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी नारी जीवन में सुधार की आवश्यकता है।

\*\*\*\*\*

सन्दर्भ सूची -

1. सद्दीक मोहम्मद: राजस्थानी लोक साहित्य एवं भारत गाथाएँ एक अध्ययन, मूल प्रकाशन, कमला नेहरू नगर, जोधपुर, संस्करण 2007, पृ.सं.-31
2. महीपाल सिंह राठौड़, गणगौर के लोक गीत, सुधन प्रकाशन, गोपालबाड़ी, जोधपुर, संस्करण-2018, पृ.सं.-5
3. नानुराम संस्कृती, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार सोजती गेट, जोधपुर, संस्करण-2020, पृ.सं.-48
4. नानुराम संस्कृती, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, संस्करण-2020, पृ.सं.-50
5. नानुराम संस्कृती, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, संस्करण-2020, पृ.सं.-51
6. नानुराम संस्कृती, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, संस्करण-2020, पृ.सं.-51
7. नानुराम संस्कृती, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, संस्करण-2020, पृ.सं.-52
8. नानुराम संस्कृती, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, संस्करण-2020, पृ.सं.-53
9. नन्दलाल कल्ला, हिन्दी का प्रादेशिक लोक साहित्य शास्त्र, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, प्रथम संस्करण-2014, पृ.सं.-111
10. रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, नरत्तमदास स्वामी: राजस्थान के लोक गीत, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, संस्करण-2019, पृ.सं.-80
11. सोहनदास चरण: राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, संस्करण-2016, पृ.सं.-32
12. गोविन्द अग्रवाल, राजस्थानी लोकगीत, लोक संस्कृति शोध संस्थान नगरश्री चूरूस्ट, चूरू, प्रथम संस्करण-20136, पृ.सं.-36
13. गोविन्द अग्रवाल, राजस्थानी लोकगीत, लोक संस्कृति शोध संस्थान नगरश्री चूरूस्ट, चूरू, प्रथम संस्करण-20136, पृ.सं.-37
14. सोहनदास चरण, राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन, पृ.सं.-32
15. गोविन्द अग्रवाल, राजस्थानी लोकगीत, लोक संस्कृति शोध संस्थान नगरश्री चूरूस्ट, चूरू, प्रथम संस्करण-20136, पृ.सं.-28
16. गोविन्द अग्रवाल, राजस्थानी लोकगीत, लोक संस्कृति शोध संस्थान नगरश्री चूरूस्ट, चूरू, प्रथम संस्करण-20136, पृ.सं.-79
17. सद्दीक मोहम्मद, राजस्थानी लोक साहित्य एवं भारत गाथाएँ एक अध्ययन, पृ.सं.-52